फरीदाबाद
# मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 223 जनवरी 2007

एक-दूसरे की मजबूरियों को समझना, एक-दूसरे की कमी-कमजोरी को स्वीकार करना तालमेल की दिशा में, हालात बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

## मसला यह व्यवस्था है (8)

### इस-उस नीति, इस-उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द-जाल हैं, शब्द-आडम्बर हैं

★ राजे–रजवाड़ों के दौर में, बेगार–प्रथा के दौर में मण्डी–मुद्रा का प्रसार कोढ में खाज समान था। छोटे–से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड–वेल्स–स्कॉट्लैण्ड–आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़–पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग–संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन–शोषण के लिये दूरदराज अमरीका–आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया। ★ फैक्ट्री–पद्धति ने मण्डी–मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री–पद्धति को भाप–कोयले ने, भाप–कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी–किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटे–से ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6–7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोजगार बने–बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने। ★ फ्रान्स–जर्मनी–इटली... में फैक्ट्री–पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी–किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग–संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका.... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"। ★ बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री–पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914–19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939–45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये। ★ अब फैक्ट्री–पद्धति में यह इलेक्ट्रॉनिक्स का दौर है। फैक्ट्री–पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कौने–कौने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया–अफ्रीका–दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी–किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार–किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ–भर में बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

व्यक्ति/व्यक्तित्व को एक तरफ गौण-दर-गौण बनाती और दूसरी तरफ व्यक्ति का महत्व स्थापित करती वर्तमान समाज व्यवस्था वास्तव में गौण को महत्वपूर्ण बना रही है। छवि की महामारी के सन्दर्भ में आइये विद्यालय शिक्षा पर कुछ चर्चा करें।

● परिवार के तवे से विद्यालय के चूल्हे में बच्चों को धकेला जाना सामान्य बात बन गई है। बाल मन में छवि और वास्तविक के द्वन्द्व का सिलसिला आरम्भ कर दिया जाता है। तन को कष्ट देना और मन को मारना बच्चों की नियति-सी बन गई है। किसी के सिखाने पर-किसी के दबाव में यह करना अथवा स्वयं ही ऐसा करने वाला-वाली में ढल जाना स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं लिये है। पीड़ा को अन्यों से छिपाना, बल्कि खुद से भी छिपाना सिखाया-सीखा जाता है। विद्यालय शिक्षा पीड़ा का महिमामण्डन करती है, अधिक पीड़ा झेलने वालों को नायक-नायिका के तौर पर अनुकरणीय उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इच्छाओं, भावनाओं व प्रवृतियों को दबाना, छिपाना और अपमान सहना-दण्ड स्वीकार करना सीखना छवि निर्माण के स्रोत हैं। विद्यालयों में हैं :

– हँसने और रोने पर रोक।
– भोजन और खेल की घण्टी।
– आपस में बातचीत की मनाही, अध्यापक को देखना-सुनना, पंक्ति/क्रम का पालन।
– निर्देश अनुसार उठना-बैठना और पानी-पेशाब-टट्टी के लिये अनुमति लेना।
– बड़े और छोटे, वरिष्ठ और कनिष्ठ के भेद, आज्ञापालन।
– गुस्से की अभिव्यक्ति पर रोक, बोरियत को छुपाना।
–नींद, आराम, आलस्य, पसरना अवांछनीय।

> **ऊँच-नीच। आधुनिक ऊँच-नीच। अखाड़ा-मण्डी। विश्व मण्डी। होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन का सर्वग्रासी अभियान। स्वयं मनुष्यों का मण्डी में माल बन जाना। यह है वर्तमान समाज व्यवस्था।**

– ज्ञान का, शक्ति का, कौशल का बखान।
– अन्य से कम, कमजोरी, अज्ञान हीन-हेय।
–मामुली भेद, भिन्नता को परीक्षाओं, प्रतियोगिताओं के जरिये बढाना और अन्तर का महिमामण्डन, मामुली अन्तर को महत्वपूर्ण बनाना।
– लड़का और लड़की के स्वाभाविक व सहज सम्बन्धों को छिपाना, नकारना सिखाना-सीखना।
– गर्त में ले जा रही वर्तमान व्यवस्था के मूल्यों के अनुसार अच्छे और बुरे छात्र के पैमाने।
– दण्ड और अपमान।

उपरोक्त बातें सामान्यतः सब विद्यालयों में हैं। विद्यालय शिक्षा का सार हैं यह। विद्यालय कोई भी हो, छवि को-छवियों को स्थापित कर वास्तविक और छवि की तनातनी वाली पीड़ा के अथाह दलदल का निर्माण करता है। व्यक्ति की छवि और वास्तविक स्थिति में जितना अधिक फर्क होता है उतनी ही ज्यादा झूठ, फरेब, दिखावे की पीड़ा व्यक्ति को झेलनी पड़ती है। लेकिन छवि और वास्तविक की दूरी कम करना कोई समाधान नहीं है। छवि के अनुरूप अपने को ढालने वालों को अपने तन इतने तानने और मन इतने मारने पड़ते हैं कि उनका जीवन अत्यन्त एकांगी और एकाकी बन जाता है, समुद्र में पीड़ा का पहाड़ बन जाता है।

● छवियों के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाते विद्यालयों की अपनी-अपनी छवियाँ हैं। वर्तमान ऊँच-नीच वाली व्यवस्था के अनुरूप बड़े-छोटे, महँगे-सस्ते, अच्छे-खराब विद्यालय की श्रेणियाँ व छवियाँ हैं। विद्यालय पद्धति की विशेष, बीच वाले, और सामान्य श्रेणी-छवि के निर्माण में भूमिका है :

– चन्द विद्यालय, नफीस विद्यालय हैं जो वर्तमान व्यवस्था के संचालक मण्डल के सदस्य तैयार करते हैं। छवि का माहात्म्य इन विद्यालयों का सार है और नफासत इनकी कार्यपद्धति।
– दूसरी श्रेणी में वे विद्यालय हैं जो वर्तमान

(बाकी पेज तीन पर)

# दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

## चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

***अल्फा इन्स्ट्रुमेन्ट्स-अभिराषि इम्पैक्स मजदूर:*** "30/2 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे कार्य आरम्भ करने वालों में से 4-5 को साँय 6½ बजे, बाकी कारीगरों को 7½भर और कैजुअल व पैकिंग वालों को आवश्यकता अनुसार 48 घण्टे तक लगातार काम करवाने के बाद छोड़ते थे। साँय 6½ छूटने वालों को चाय-मट्ठी नहीं और एक घण्टे का ओवर टाइम भी नहीं। दो घण्टे वालों को सिंगल रेट से ओवर टाइम और 7 बजे चाय-मट्ठी। रात 10 बजे बाद तक रोकने पर रोटी के 10 रुपये। फैक्ट्री में काम करते आधे से ज्यादा मजदूरों को दस्तावेजों में दिखाते नहीं थे, उनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, और भर्ती पर तनखा 1500 रुपये। एस.जी.एम. नगर से इन्डस्ट्रीयल एरिया में स्थानान्तरित फैक्ट्री के मजदूरों को इधर-उधर दिखाने के लिये तीन कम्पनियाँ बना रखी हैं और इस से उस कम्पनी में नाम डाल कर स्थाई मजदूरों की 8-10 वर्ष की नौकरी मैनेजमेन्ट खा गई। पिता-पुत्र डायरेक्टर हैं और पिता हर समय सिर पर खड़ा रहता है। दो महीने पहले एक महिला मजदूर द्वारा श्रम विभाग में शिकायत पर कम्पनी ने एक स्थाई मजदूर को वहाँ मैनेजर बना कर पेश किया। इधर 24 नवम्बर को स्थाई मजदूरों ने श्रम विभाग में शिकायत की। इस पर 29 नवम्बर को अधिकतर कैजुअल वरकरों को निकाल दिया परन्तु समय पर वेतन नहीं देने वाली कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को नवम्बर की तनखा 9 दिसम्बर को दी और पहली बार पे-स्लिप भी दी। अब अधिकतर स्थाई मजदूर 5½ बजे छुट्टी कर जाते हैं। कम्पनी ने बोनस कभी दिया ही नहीं है पर नवम्बर का वेतन देते समय बोनस रजिस्टर में भी हस्ताक्षर करवा लिये। फैक्ट्री में हर प्रकार के वाहनों के ऑटोमीटर बनते हैं और अधिकतर उत्पादन का अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी, हॉलैण्ड, तुर्की को निर्यात होता है। कम्पनी वर्ष में सिर्फ चार छुट्टी देती है।"

***टालब्रोस इंजिनियरिंग वरकर :*** "74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर हैं और एक हजार वरकरों को एक ठेकेदार के जरिये रखा बताते हैं हालाँकि भर्ती कम्पनी स्वयं ही करती है। ठेकेदार के नाम दर्शाये 1000 मजदूरों में से 60 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्पर की तनखा 1825 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन कार्य करना अनिवार्य है। टालब्रोस में प्रवेश का समय निश्चित है, निकास का नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कार्य के दौरान चोट लगने पर थोड़ा इलाज करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं। फैक्ट्री में टाटा, बजाज, महिन्द्रा, मैसी आदि के पुर्जे बनते हैं।"

**सेक्युरिटी गार्ड :** " कोठी 419 सैक्टर-21 में कार्यालय वाली **एन एम एस सेक्युरिटी** कम्पनी गार्डों से प्रतिदिन 12 घण्टे और महीने के तीसों दिन ड्युटी करवाती है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटी जाती हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं।"

***जेमी मोटर्स मजदूर :*** "सैक्टर-11 मॉडल टाउन स्थित फैक्ट्री पर पहले अमेरिकन यूनिवर्सल का बोर्ड था, फिर जी.ई. मोटर्स का लगा और अब नाम जेमी मोटर्स है। फैक्ट्री में साफ-सफाई बहुत है पर कैन्टीन में 10 रुपये की थाली में पेट नहीं भरता। दुबारा माँगने पर कैन्टीन वाले आनाकानी करते हैं और कहते हैं कि 10 रुपये में इतना ही मिलेगा। वैसे बताते हैं कि कम्पनी प्रति थाली 15 रुपये अलग से देती है। कम्पनी ने पैकिंग, सफाई आदि में ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे हैं और ट्रेनी में 6 महीने वालों तथा 1½ साल वालों की श्रेणी बनाई हैं। डर और लालच के जरिये कम्पनी ट्रेनी पर काम के बोझ को लगातार बढा रही है। कहते हैं कि कम्पनी की अमरीका स्थित फैक्ट्रियों में शनिवार व रविवार की छुट्टी रहती है पर यहाँ तो रविवार को भी काम करवाते हैं। नये प्लान्ट में 24 दिसम्बर वाले रविवार को तो कम्पनी ने हद कर दी। इधर साल-भर में उत्पादन 40 प्रतिशत बढाया है और 24 दिसम्बर को मैनेजर आ कर बोल गया कि उस दिन उत्पादन में 80 प्रतिशत वृद्धि करने पर ही छुट्टी मिलेगी। सुबह 6 बजे से शिफ्ट शुरू हुई थी और रविवार को इक्का-दुक्का स्थाई मजदूर जो आये थे वे शिफ्ट समाप्ति के समय 2½ बजे चले गये परन्तु निर्धारित उत्पादन देने के लिये प्रशिक्षुओं को 5 बजे तक काम करना पड़ा। कम्पनी ओवर टाइम को मानती ही नहीं - शिफ्ट के बाद 2½ घण्टे अतिरिक्त समय काम के लिये जेमी-जी.ई. मोटर्स कम्पनी कोई पैसे नहीं देगी। कम्पनी ने 24 दिसम्बर को मजदूरों से बेगार करवाई।"

***सुपरवेयर आर.एस. प्लास्टिक वरकर :*** "2 धर्म काँटा रोड, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है, रविवार को भी 12 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चाय के लियें 3 रुपये कम्पनी देती है पर 10 मिनट की देरी पर आधे घण्टे का समय काट लेती है और चाय के पैसे भी नहीं देती। ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू कर रखे हैं पर हैल्परों की तनखा 1500-1600 रुपये और ऑपरेटरों की 2100-2500 रुपये। बोनस वाले रजिस्टर में 6 महीने पहले ही हस्ताक्षर करवा लेते हैं पर बोनस में 1000-1500 रुपये ही देते हैं। फैक्ट्री में क्रॉकरी का उत्पादन होता है, कप-प्लेट बनते हैं और साहब गाली देता है, धक्का भी मार देता है।"

***अमर इंजिनियरिंग मजदूर :*** "प्लॉट 5 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में सुबह 7 से रात 8½ बजे तक की एक शिफ्ट है। रविवार को 7 से 4½। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1900 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में रेलवे के पुर्जे बनते हैं और भारी बोझ वाला काम है - चोट लगती रहती हैं। चोट लगने पर कम्पनी प्रायवेट में दवाई-पट्टी करवा देती है। ज्यादा चोट लगने पर कहते हैं कि जाओ आराम करो और ठीक हो जाओ तब ड्युटी आना। कम्पनी 13½ घण्टे में एक चाय-मट्ठी देती है। नवम्बर की तनखा 13 दिसम्बर को दी।"

***ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर :*** "13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर, और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 80 मजदूर काम करते हैं। कैजुअल वरकरों की तनखा 2484 रुपये है और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर अधिकतर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे रोज पर तीस दिन के 1500-1600 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इस समय सुबह 8½ से 5 की शिफ्ट है पर 7 बजे तक तो रोकते ही हैं - महिला मजदूरों को 7 के बाद नहीं रोकते पर पुरुष रात 9 बजे तक भी काम करते हैं। रात 7 से अगले रोज सुबह 7 बजे की शिफ्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर ही रहते हैं। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी सिंगल रेट से तो देती ही है, ओवर टाइम के आधे घण्टे अधिकारी खा जाते हैं। तनखा में फिर देरी शुरू कर दी है - नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर को दिया।"

***एस.के. इंजिनियरिंग वर्क्स वरकर :*** "सैक्टर-59 में जे.सी.बी. के सामने मथुरा रोड पर स्थित फैक्ट्री में सी एन सी मशीनों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट जारी हैं पर इधर अन्य विभागों में 12½ घण्टे की एक शिफ्ट कर दी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रविवार को 8 घण्टे पर रोटी के लिये 15 रुपये और रात में 12 घण्टे पर 25 रुपये देते हैं। हैल्परों की तनखा 1600-1800 रुपये।"

***मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :***
*★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सडक पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सडक पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।*
*महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

# अनुबन्ध में आत्महत्या

ठेकेदारों के जरिये बड़ी सँख्या में कर्मी रखना सरकारों की परम्परा रहा है। इधर सरकारों द्वारा स्थाई कार्य के लिये अन्य तरीकों से अस्थाई भर्ती करना बहुत बढ गया है। सरकारें 89 दिन के अनुबन्ध पर कर्मचारी रखती हैं और फिर इन 89-दिनि अनुबन्धों को दोहराती रहती हैं। अनुबन्ध पर रखे जाते कर्मचारी की तनखा वही काम करते स्थाई कर्मी के वेतन से आधी-तिहाई होती है। बिना कारण बताये कभी भी नौकरी से निकाला जा सकता है इसलिये अनुबंधित को कदम-कदम पर झुकना पड़ता है और अधिक बोझ उठाना पड़ता है। अनुबंध का नवीनीकरण होता रहे इसके लिये एक जरूरी-सी शर्त है कि अनुबंधित कर्मचारी किसी प्रकार का विरोध नहीं करे....

छत्तीसगढ सरकार ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में अस्सी हजार शिक्षक अनुबन्धों के आधार पर रखे हैं। इन अनुबंधित शिक्षकों को 2500-4500 रुपये वेतन दिया जाता है। तनखा बढाने की माँग करते हुये छत्तीसगढ सरकार के 80 हजार अनुबंधित शिक्षकों ने 20 नवम्बर 06 से राज्य-भर में पढाना बन्द कर दिया। सरकारी स्कूलों में पढाई प्रभावित होने से सरकारें कम ही चिन्तित होती हैं। ऐसे में दबाव बढाने के लिये अनुबंधित अध्यापकों ने 12 दिसम्बर को राजधानी रायपुर में धरना आरम्भ किया। एकत्र हुये हजारों महिला व पुरुष शिक्षकों की पुलिस ने लाठियों से पिटाई की और 4500 को गिरफ्तार भी किया। पुलिस द्वारा सार्वजनिक तौर पर अपमानित किये जाने पर अध्यापकों ने राज्यपाल से दया मृत्यु की अनुमति माँगी है..... सरकारें अनुबंध की शर्तों में आत्महत्या की अनुमति वाली धारा जोड़ सकती हैं। (जानकारी 18-12-06 के 'हिन्दुस्तान' अखबार से)

## कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

***हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 06 से 2484 रुपये 28 पैसे है, 8 घण्टे काम के लिये 95 रुपये 55 पैसे।***

***मिनासा कास्टिंग मजदूर :*** "प्लॉट 213 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों की ड्युटी सुबह 7 से साँय 7½ बजे तक है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअलों की तनखा 1800-2000 रुपये है। फैक्ट्री में प्रदूषण बहुत है — नये लोग गैस लगने पर नौकरी छोड़ जाते हैं।" ***शिवालिक ग्लोबल वरकर :*** "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। नवम्बर की तनखा आज 16 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

***श्याम टैक्स इन्टरनेशनल मजदूर :*** "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10 ठेकेदार हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अक्टूबर की तनखा 5 दिसम्बर को जा कर दी। नवम्बर का वेतन आज 19 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

***आइडियल वरकर :*** "प्लॉट 16 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2000 रुपये है।"

## मसला यह व्यवस्था है...... (पेज एक का शेष)

व्यवस्था के दार्शनिक-सिद्धान्तकार स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। खुरदरे को तराश कर गोलमोल करना, सहज-सरल को गूढता के लबादे में लपेटने में दक्ष बनाना इन विद्यालयों की शिक्षा का सार है।

— तीसरी श्रेणी के विद्यालय वर्तमान व्यवस्था के उच्च प्रशासनिक स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। नफासत और खुरदरेपन के बीच की कड़ी को दीक्षित करते यह विद्यालय हीन भावना और महत्वाकांक्षा के संगम स्थल हैं।

—चौथी श्रेणी के विद्यालयों का कार्य वर्तमान समाज व्यवस्था के सामान्य प्रशासनिक स्तर के सदस्य तैयार करना है। डर और लालच के जरिये पीड़ितों में वर्तमान व्यवस्था के मूल्य इस श्रेणी के विद्यालय स्थापित करते हैं।

— और, विशाल सँख्या है पाँचवीं श्रेणी के विद्यालयों की। यह विद्यालय वर्तमान व्यवस्था के मजदूर — सिपाही, कर्मचारी, अध्यापक, फैक्ट्री व अन्य व्यवसाय के वरकर — और दुकानदार स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। भौतिक और बौद्धिक तौर पर कंगले यह विद्यालय वीभत्स रूप में अपमान तथा दण्ड के जरिये विद्यालयों की वास्तविकता के दर्शन कराते हैं।

विद्यालयों की प्रत्येक श्रेणी अपनी-अपनी छवि का निर्माण करती है। एक श्रेणी में भी भिन्न छवियाँ होती हैं। निकट वाली श्रेणियों में थोड़ा-बहुत आवागमन होता है। ऊँची छलाँग-भारी गिरावट घटना हैं, कभी-कभार होती हैं और खबर बन कर छवियों में श्रेणीबद्धता को महत्व देती हैं, महत्वपूर्ण बनाती हैं।

*गौण के महत्वपूर्ण बनने की त्रासदी ने छवियों का श्रेणीकरण कर उन में कम व अधिक महत्व की श्रेणी बना दी हैं। यह पीड़ा को छिपाने में दोहरी परत का काम करती है। हम ने अपनी क्या गत बना ली है कि अपने जीवन को सिकोड़ने को हम सफलता की कुँजी मान बैठे हैं !*

*नीति, पार्टी, नेता बदलने से इस सब में कोई फर्क पड़ेगा क्या ?* (जारी)

# पी.पी. रोलिंग मिल्स

***पी.पी. रोलिंग मिल्स मजदूर :*** "प्लॉट 39 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में पूरी रोलिंग मिल बनती है — बियरिंग जापान से आती हैं और फैक्ट्री का उत्पादन सउदी अरब, इंग्लैण्ड आदि कई देशों को निर्यात किया जाता है। फैक्ट्री में ग्राइन्डिंग व पेन्ट के कारण बहुत प्रदूषण है और एग्जास्ट फैन एक भी नहीं है।

"कम्पनी का मुख्यालय फ्रैन्ड्स कॉलोनी, दिल्ली में है। पहली फैक्ट्री डी-1 ओखला फेज 1 में है। इधर 39 सैक्टर-27 सी में जगह की भारी कमी की वजह से कम्पनी ने सराय के पास भास्कर एस्टेट में तीसरी फैक्ट्री लगा ली है और अतुल ग्लास फैक्ट्री वाला प्लॉट भी खरीद लिया है।

"पी.पी. रोलिंग में मशीन शॉप में 12-12 घण्टे और फिटर विभाग में 11½-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 8-8 घण्टे की ड्युटी। मजदूरों को फुरसत बिलकुल नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम देते थे। कई बार माँग करने के बाद इधर 4-5 महीने से ओवर टाइम सिंगल रेट से किया है।

"इस समय सैक्टर-27 सी वाली फैक्ट्री में 150 मजदूर व 50 से अधिक स्टॉफ के लोग हैं। स्थाई मजदूर 50 से कम हैं और 100 से ज्यादा को कैजुअल कहते हैं। कैजुअलों को निकालते नहीं, 7-8 साल से लगातार नौकरी कर रहे भी कैजुअल हैं। कैजुअल हैल्पर की तनखा 1800-2000 रुपये और कैजुअल कारीगर की 2500-3500 रुपये। ***कैजुअल वरकरों को कम्पनी दस्तावेजों में दिखाती ही नहीं।*** जाँच वालों के आने की सूचना कम्पनी को पहले ही मिल जाती है और उस दिन कैजुअलों को फैक्ट्री आने से मना कर देते हैं। साल में दो बार तो ऐसा हो ही जाता है।

"पी.पी. रोलिंग में कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी. एफ. नहीं हैं। छह महीने पहले रात की ड्युटी में क्रेन से जॉब उठाते समय एक कैजुअल की दो उँगली कट गई। वह 4 वर्ष से काम कर रहा था पर एक दिन पहले की भर्ती दिखा कर कम्पनी ने उसकी ई.एस. आई. करवाई। इधर 15 दिन पहले गियर बॉक्स में एक कैजुअल की उँगली छिल गई। कम्पनी ने उसकी ई.एस.आई. नहीं करवाई। पन्द्रह दिन पट्टी करवाने पर ठीक नहीं हुआ तो अब कम्पनी ने 10 दिन की छुट्टी पर भेज दिया है।

"पी.पी. रोलिंग की फरीदाबाद फैक्ट्रियों में मजदूरों को एक से दूसरी जगह भेजते रहते हैं। दस महीने पहले क्रेन ऑपरेटर को दिन की ड्युटी के बाद रात के लिये रोका था। घर से खाना खा कर फैक्ट्री लौटते समय रात 9 बजे मथुरा रोड पार करते समय एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो गई। जिला अस्पताल से लाश लाये, दाह संस्कार किया— दोनों शिफ्टों में काम नहीं हुआ। कम्पनी ने दाह संस्कार वाले दिन के बदले त्यौहारी छुट्टी के दिन ड्युटी करवाई! पी.पी. रोलिंग मिल्स का चेयरमैन प्रेम खन्ना है।"

## पी.एफ. लूट पर लगाम

***सक्युरिटी गार्ड :*** " एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये मैं एस्कोर्ट्स फर्स्ट प्लान्ट में लगा। कुछ माह बाद ब्रेक पर फण्ड का फार्म भरा। सिंगल से कुछ ज्यादा राशि का चैक मेरे बैंक खाते में पहुँचा। डबल क्यों नहीं ? मैंने इधर-उधर पूछताछ की तो मुझे यही बताया गया कि भविष्य निधि कार्यालय ने मुझे कम पैसे दिये हैं। मैं पी. एफ. दफ्तर गया। भविष्य निधि कर्मचारी-अधिकारी मुझे टरकाने लगे। इस पर मैंने लिखित शिकायत दी तब पी एफ वालों ने मुझे फार्म 10 ग (लाल फार्म) भरने को कहा। मैंने फार्म 10 ग भविष्य निधि कार्यालय मे जमा करवाया। पी.एफ. कार्यालय की तरफ से 1122 रुपये का दूसरा चैक मेरे बैंक खाते में पहुँचा। इस प्रकार मैंने अपनी पी.एफ. की राशि ली।"

*(कानून का उल्लंघन कर कैजुअल वरकरों व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों में अधिकतर पर पी.एफ. के प्रावधान लागू ही नहीं किये जाते और इन में जिन थोड़े-से मजदूरों को भविष्य निधि के दायरे में लिया जाता है उनकी 35 प्रतिशत राशि को भविष्य निधि संगठन कुछ समय से ऐंवें ही हड़पने में लगा है। उपरोक्त मजदूर ने भविष्य निधि संगठन द्वारा हड़प ली गई 1122 रुपये की राशि को वापस लिया।)*

## दिल्ली से -

*अब दिल्ली में 8 घण्टे की ड्युटी और हफ्ते में एक छुट्टी पर कम से कम तनखा हैल्पर की 3312 रुपये (8 घण्टे के 127 रुपये 40 पैसे); अर्ध-कुशल श्रमिक की 3478 रुपये (8 घण्टे के 133 रुपये 80 पैसे); कारीगर की 3736 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये 70 पैसे)। स्टाफ में कम से कम तनखा अब मैट्रिक से कम की 3505 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3760 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4072 रुपये।*

***स्टाइल काउन्सल मजदूर :*** "डी-96 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 के ही हैं। फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 1 बजे तक की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती। महीने के तीसों दिन सुबह 9½ से रात 1 बजे तक काम - चार महीने से कम्पनी ने एक छुट्टी भी नहीं दी है।"

***बीना प्रेस वरकर :*** "सी-66/3 ओखला फेज 2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान डबल की बजाय सवा की दर से करते हैं।"

***रैन्स इन्टरनेशनल मजदूर :*** "डी-66 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1700 रुपये और कारीगरों की 2100-3500 रुपये। फैक्ट्री में 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है - ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस. आई. व पी.एफ. 35 वरकरों में से 15 की ही।"

***फैशन एक्सपोर्ट वरकर :*** " बी-71 ओखला फेज 2 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर को 12 घण्टे की ड्युटी पर महीने के 2000 रुपये देते थे। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ.नहीं। इधर कम्पनी की मैनेजमेन्ट बदल गई है और फैक्ट्री में मेन्टेनैन्स का काम चल रहा है। ऐसे में हमें ड्युटी से निकाल दिया है और किये काम के पैसे भी नहीं दिये हैं।"

***आनन्द इन्टरनेशनल मजदूर :*** "डी-3 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 700 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 127 के ही हैं। इधर कम्पनी ने फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट कर दी हैं। पुराने हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3312 रुपये और नये हैल्परों को 2500 रुपये। फैक्ट्री में 650 पुरुष मजदूरों के लिये सिर्फ एक लैट्रीन है - लाइन लगी रहती है।"

***'फैक्ट्री का नाम नहीं मालूम' वरकर :*** "डी-16 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखी महिला मजदूरों की तनखा 2200 रुपये और पुरुष मजदूरों को 12 रुपये प्रति घण्टा के। महिलाओं का 3 घण्टे प्रतिदिन ओवर टाइम और पुरुषों का उससे अधिक - ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

***'फैक्ट्री का नाम नहीं मालूम' मजदूर :*** "डी-8/4 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 20 की ही हैं। हैल्परों की तनखा 1600-3000 रुपये और कारीगरों की 3000 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। वेतन देरी से - नवम्बर की तनखा 30 दिसम्बर को दी।"

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद - 121001**

विचारणीय
## गुडईयर हड़ताल

नवम्बर अंक में हम ने अमरीका व कनाडा में ***गुडईयर टायर एण्ड रबड़*** कम्पनी की 16 फैक्ट्रियों में 12 हजार से ज्यादा मजदूरों द्वारा हड़ताल का जिक्र किया था। इन्टरनेट के जरिये मित्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार 5 अक्टूबर को आरम्भ हुई हड़ताल 20 दिसम्बर को भी जारी थी।

उत्तरी व दक्षिणी अमरीकी महाद्वीपों में गुडईयर सबसे बड़ी टायर निर्माता कम्पनी है। यूरोप में यह दूसरे नम्बर पर है। भारत में गुडईयर की फैक्ट्रियाँ हैं - फरीदाबाद में फैक्ट्री है। चीन में फैक्ट्रियाँ स्थापित करने की बातें....

कनाडा-अमरीका में गुडईयर फैक्ट्रियों में 5 अक्टूबर से हड़ताल का कारण जुलाई 06 से मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता नहीं होने को बताया गया। यूनियन के निर्देश पर हड़ताल...... प्रारम्भ में जो छुटपुट सामग्री मिली उससे हमें आशंका हुई थी कि यह हड़ताल एक जाल है जो मजदूरों को भारी नुकसान के लिये बुना गया है। इधर मित्रों से प्राप्त जानकारी ने हमारी आशंका को बढाने का काम किया है।

- नये स्थाई भर्ती वाले मजदूरों को कम तनखा देने; पेन्शन में कटौती; चिकित्सा में कटौती; कार्यस्थल की स्थितियाँ बदतर करने; दो फैक्ट्रियाँ बन्द कर दो हजार मजदूरों की छँटनी करने पर मैनेजमेन्ट और यूनियन में सहमति बन चुकी थी। फिर, नये भर्ती के लिये अन्य टायर कम्पनियों से हुये समझौते से भी कम राशि की बात गुडईयर मैनेजमेन्ट ने की ....... और यूनियन अड गई। चालीस प्रतिशत मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्ट-यूनियन सहमति के विरोध को एक आधार बना यूनियन ने हड़ताल की घोषणा की। मैनेजमेन्ट द्वारा अन्य लोगों के जरिये फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य - 10 प्रतिशत से कम और खराब भी....

***स्थाई मजदूरों को अधिक दबाने के लिये नरम करने के वास्ते कम्पनियों द्वारा हड़तालें की रचना करना अथवा तालाबन्दी करना इधर काफी समय से आम बात है।***

अमरीका में गुडईयर के स्थाई मजदूर की तनखा फरीदाबाद में गुडईयर फैक्ट्री के स्थाई मजदूर की तनखा से पच्चीस गुणा है और कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये यहाँ रखे जाते वरकरों के वेतन से तो डेढ सौ गुणा है। ऐसी ही स्थिति चीन आदि में है। ऐसे में यूरोप-अमरीका से बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ भारत-चीन आदि में उत्पादन स्थानान्तरित कर रही हैं। इधर वाहन उद्योग की तीव्र गति भी गुडईयर जैसी कम्पनियों के लिये आकर्षण है।

लेकिन वाहनों की अमरीका में भरमार है। प्रमुख टायर निर्माता की फैक्ट्रियों में ढाई महीने उत्पादन बन्द के कारण अमरीका-कनाडा में वाहन उद्योग प्रभावित होने के आसार। फिर, अमरीका सरकार की सेना के वाहनों के टायरों का प्रमुख स्रोत भी गुडईयर कम्पनी है। इराक-अफगानिस्तान में युद्ध पर खराब असर.... अमरीका सरकार की फौज ने न्यायालय के जरिये हड़ताल समाप्त करवाने की बातें शुरू कर दी हैं। और, यूनियन ने "हमारी सेना" की कार्यकुशलता, "हमारे सैनिकों" की सुरक्षा का राग अलापना शुरू कर दिया है - हड़ताल खत्म करने की पैंतरेबाजी में यूनियन कहने लगी है कि फैक्ट्रियों में जो लोग काम कर रहे हैं उन्हें निकालो तो यूनियन फौरन काम चालू करवा देगी....... मजदूरों को प्रभावित करने वाले मुद्दे गायब !!

"फँसा दिया" कह कर विलाप करने से कुछ नहीं होता। फैक्ट्रियों में हड़ताल-तालाबन्दी की घटना से आज स्थाई मजदूर बहुत प्रभावित होते हैं। इन घटनाओं से पार पाने के उपायों पर विचार-विमर्श आवश्यक है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

**RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**